Teach Yourself Samskrit

प्रधानसम्पादक :
वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री

विदुरनीतिशतकम्

अध्ययनसामग्रीलेखिका
शशिप्रभा गोयल

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली

विदुरनीति का परिचय

संस्कृत के प्रत्येक प्रबुद्ध पाठक को महात्मा विदुर के नाम से सुपरिचित होने का सौभाग्य प्राप्त है। उनके नाम का उल्लेख महाभारत में हुआ है। विदुर एक ऐसे महात्मा थे जो महाप्रज्ञ, परम नीतिज्ञ, सत्यनिष्ठ एवं धर्म के मर्मज्ञ थे। सञ्जय ने युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण का सन्देश धृतराष्ट्र को सुनाया कि यदि पाण्डवों का उचित भाग उन्हें न दिया गया हो तो युद्ध अवश्यम्भावी है। इस पर सन्तप्त धृतराष्ट्र को महात्मा विदुर ने धर्मयुक्त तथा कल्याणकारी उपदेश दिया। धृतराष्ट्र जैसे श्रद्धावान् श्रोता के जिज्ञासा-पूर्ण प्रश्नों व विदुर जैसे हितचिन्तक नीतिज्ञ के सारगर्भित उत्तरों का संग्रह ही विदुरनीति है।

विदुरनीति एक ऐसा सद्ग्रन्थ है जो हमें सदाचार, व्यवहार-कुशलता एवं राजनैतिक बुद्धिमत्ता सम्बन्धी उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करता है। आबालवृद्ध सभी इस रोचक ग्रन्थ के पठन-पाठन व मनन से लाभान्वित होकर अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं। हमने इसी पावन ग्रन्थ के एक सौ अनूठे रत्नों का संग्रह तृतीया दीक्षा के अध्येताओं के लिए किया है। पाँच-पाँच श्लोकों के अन्तराल पर व्याकरण-सम्बन्धी अभ्यास जोड़े गए हैं। ये श्लोकों के सर्वांगीण हृदयंगम में सहायक सिद्ध होंगे।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि सुधी पाठक हमारे इस विनीत प्रयास का लाभ अवश्य उठाएँगे।

इस अध्ययन-सामग्री की लेखिका श्रीमती शशिप्रभा गोयल अभिनन्दनीय हैं जिन्होंने इस अवस्था में भी पूरे उत्साह एवं मनोयोग से इस पाठ्य-सामग्री को तैयार किया है। इस सामग्री के पुनरीक्षण एवं सम्पादन में प्रो. आर. देवनाथन्, डॉ. ललित कुमार त्रिपाठी, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सिंह देव, श्री वेङ्कटेश मूर्ति, डॉ. रत्नमोहन झा, प्रफुल्ल गड़पाल एवं तङ्गल्लपल्लि महेन्द्र का अवदान उल्लेखनीय है। इस सामग्री के प्रकाशन में जिनका भी साक्षात् या परोक्ष अवदान रहा है; मैं उन सबके प्रति साधुवाद देता हूँ।

अध्येतागण इसका अध्ययन कर इसमें अपेक्षित परिष्करण या परिवर्तन के सुझाव अवश्य दें, जिन्हें अग्रिम संस्करण में क्रियान्वित किया जा सकेगा। हमें विश्वास है कि अध्येताओं के लिए यह अध्ययन-सामग्री उपयोगी सिद्ध होगी।

वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री

विषय-सूची

	विषयः	पृष्ठसंख्या
1.	**विद्यार्थी वा सुखार्थी वा**	1
	सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम् । सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥	
2.	**विद्यायाः शत्रवः**	2
	असूयैकपदं मृत्युरतिवादः श्रियो वधः । अशुश्रूषा त्वरा श्लाघा विद्यायाः शत्रवः त्रयः ॥	
3.	**विद्यार्थिनां सप्त दोषाः**	2
	आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठिरेव च । स्तब्धता चाभिमानित्वं तथाऽत्यागित्वमेव च । एते वै सप्तदोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ॥	
4.	**अभिवादनशीलः वर्धते**	3
	अभिवादशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि सम्प्रवर्धन्ते कीर्तिरायुर्यशो वलम् ॥	
5.	**प्रशस्तानां सेवा**	4
	निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते । अनास्तिकः श्रद्दधान एतत् पण्डितलक्षणम् ॥	
	अभ्यासः – 1	6
6.	**शान्तिः योगेन विन्दते**	11
	बुद्ध्या भयं प्रणुदति तपसा विन्दते महत् । गुरुशुश्रूषया ज्ञानं शान्तिं योगेन विन्दति ॥	
7.	**प्रज्ञाबलं बलं श्रेष्ठम्**	11
	येन त्वेतानि सर्वाणि सङ्गृहीतानि भारत । यद् बलानां बलं श्रेष्ठं तत् प्रज्ञाबलमुच्यते ॥	
8.	**प्राज्ञैः मैत्रीं समाचरेत्**	12
	मत्या परीक्ष्य मेधावी बुद्ध्या सम्पाद्य चासकृत् । श्रुत्वा दृष्ट्वाथ विज्ञाय प्राज्ञैर्मैत्रीं समाचरेत् ॥	
9.	**विघ्नेभ्यः भयं कुतः**	13
	यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः । समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते ॥	
10.	**शान्तो हि पण्डितः**	14
	न हृष्यत्यात्मसम्माने नावमानेन तप्यते। गाङ्गो ह्रद इवाक्षोभ्यो यः स पण्डित उच्यते ॥	
	अभ्यासः – 2	15
11.	**मूर्खः कः ?**	20
	अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च । कर्म चारभते दुष्टं तमाहुर्मूढचेतसम् ॥	
12.	**दुर्गुणप्रियाः हि दुर्जनाः**	20

27. कुलपरीक्षा

ोकः

परिच्छदेन क्षेत्रेण वेश्मना परिचर्यया।
परीक्षेत कुलं राजन् भोजनाच्छादनेन च ॥ 7.43 ॥

च्छेदः

परिच्छदेन क्षेत्रेण वेश्मना परिचर्यया।
परीक्षेत कुलम् राजन् भोजन-आच्छादनेन च ॥

न्वयः

राजन् ! परिच्छदेन, क्षेत्रेण, वेश्मना, परिचर्यया भोजनाच्छादनेन च कुलं परीक्षेत।

ावार्थः

संस्कृतम्– कस्यचित् कुलस्य श्रेष्ठतायाः ज्ञानं कथं भवति इति अत्र उच्यते। परिवृताः परिजनाः, जन्मस्थानं, गृहं, सेवा, भोजनं, वस्त्रम् इति एतेषां परीक्षणेन कुलस्य श्रेष्ठता ज्ञायते।

हिन्दी– हे राजन् ! परिजन से, जन्मस्थान से, आवास से, सेवा से, भोजन से तथा वस्त्र से कुल की परीक्षा करें।

आंग्लम्– O king ! a dynasty is tested by its external appendages, attendants birth-places, habitations, services, food habits and clothing.

म्बद्धाः श्लोकाः

तपो दमो ब्रह्मवित्तं वितानाः
पुण्याः विवाहाः सततान्नदानम्।
येष्वेते सप्तगुणाः वसन्ति
सम्यग्वृत्तास्तानि महाकुलानि ॥ *(विदुर. 4.23)*

कुलं शीलेन धार्यते। *(चाणक्य. 5.8)*

आचारः कुलमाख्याति। *(चाणक्य. 3.2)*

28. असाधूनां शीलम्

श्लोकः

अकस्मादेव कुप्यन्ति प्रसीदन्त्यनिमित्ततः।
शीलमेतदसाधूनामभ्रं पारिप्लवं यथा ॥ 4.41 ॥

Teach Yourself Samskrit

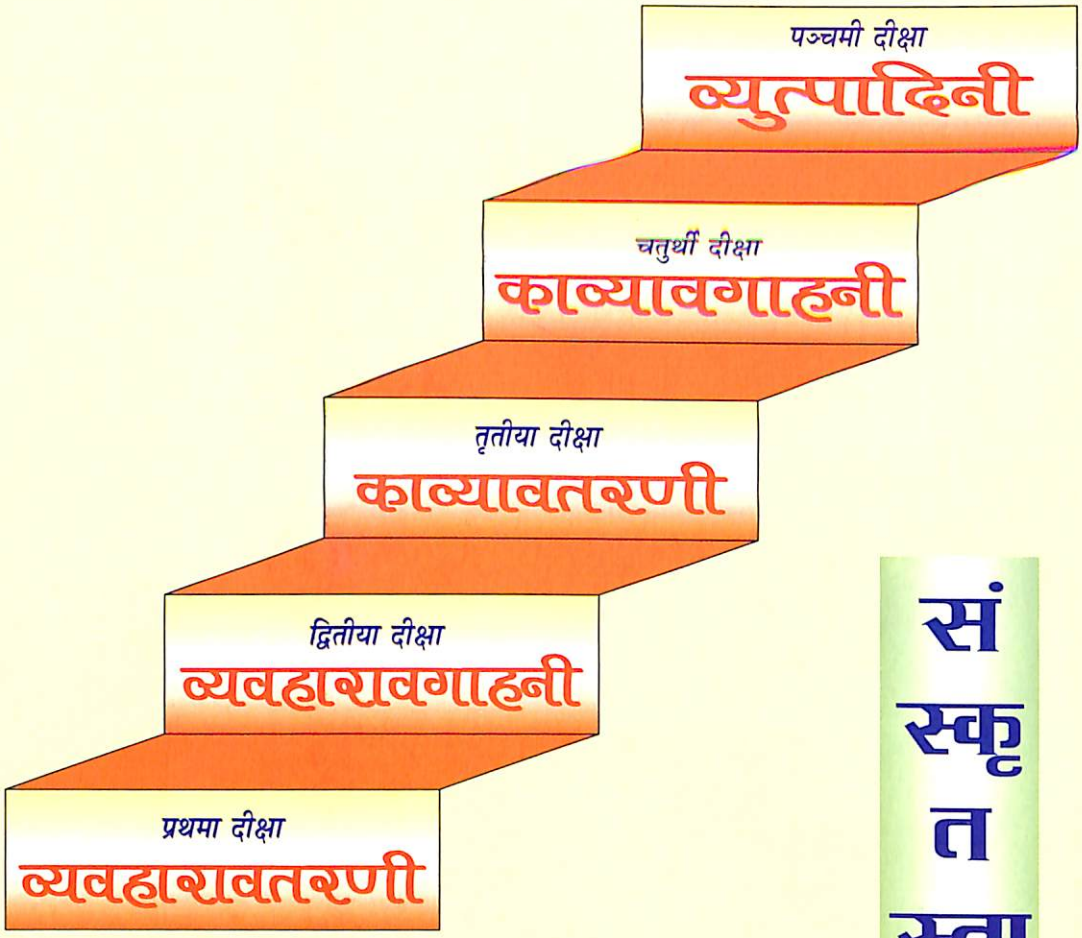

संस्कृत स्वाध्यायः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली